International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-01-2021; Accepted: 21-02-2021; Published: 26-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 52-55

'अंधेरे में' का तनाव और 'अमन का राग' : तुलनात्मक अध्ययन

गौरव वर्मा
शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
मुक्तिबोध और शमशेर आधुनिक हिंदी साहित्य के दो बड़े कवि हैं। मुक्तिबोध और शमशेर ने कई कविताएं लिखी हैं जिनमें उनकी दो प्रसिद्ध लंबी कविताएं क्रमशः अंधेरे में और अमन का राग है। अंधेरे में कविता मुक्तिबोध के तनाव का परिणाम प्रतीत होता है। इस कविता में वे समाज की विसंगतियों का चित्रण करते हुए और जनमानस को चेतना प्रदान करते हुये संघर्ष और अभव्यक्ति के लिए प्रेरित करते दिखाई देते हैं। दूसरी ओर शमशेर जो प्रेम के कवि हैं, एकालाप में संलाप के कवि हैं वे अमन का राग आलापते हुए समाज में एक सूफी की तरह भाईचारे और प्रेम का संदेश देते हुये दिखाई देते हैं। मुक्तिबोध और शमशेर दोनों एक ही समय में विद्यमान कवि थे जो समाज में एक तरफ परिवर्तन के लिए प्रेरित करते हैं और दूसरी तरफ प्रेम के लिए।

मूल शब्द: गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, अमन का राग, अंधेरे में, लंबी कविता, तुलनात्मक अध्ययन, तनाव, नई कविता, आधुनिक हिंदी साहित्य, स्वतंत्र्योत्तर कविता

प्रस्तावना

"हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह, आत्मा की प्रतिमा।" [1]

मुक्तिबोध की उपरोक्त पंक्तियां उनकी लंबी कविता 'अंधेरे में' से है। हृदय का काम वैसे तो केवल रक्त को शरीर के कोने-कोने तक पहुंचाना ही है परंतु जब विचार दिमाग की जगह हृदय से उत्पादित बताया जाता है तब वह सीधा-सीधा भावनात्मक पृष्ठभूमि से जुड़कर प्रस्तुत होता है। समाज की विसंगतियों का स्वतंत्र चित्रण करती मुक्तिबोध की कविताएं तनाव से उत्पन्न होकर पाठक को संघर्ष के लिए प्रेरित करती दिखाई देती हैं। आधुनिक साहित्य में तनाव सम्बंधित अवधारणा का जन्म स्वातंत्रयोत्तर राजनीतिक मोहभंग की स्थिति के कारण हुआ। आजादी के नाम पर आभासित स्वराज व्यवस्था जो देश को सौंपी गई वह अनगढ़ गुलाम व्यवस्था सी थी। इस व्यवस्था में लोक और जन उपेक्षित रह गया और वह मजदूर किसान भी जिसने बढ़ चढ़कर इस आजाद की मांग ही नहीं इसे पाने के अथक प्रयास भी किये थे। आलोचक अमरनाथ जी ने इस संबंध में अपनी पुस्तक "हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली" में लिखा है –

"तनाव पश्चिम की नयी समीक्षा द्वारा विकसित शब्द है।........... हिंदी की नयी समीक्षा में आलोचकों ने तनाव की यदा कदा चर्चा की है और उसे नयी कविता का एक ऐसा वैशिष्ट्य माना है, जो स्वतंत्र्योत्तर दौर के मोहभंग के कारण पैदा हुआ।"[2]

अंधेरे में कविता की यह पंक्तियाँ स्वयं में मुक्तिबोध की कलम के तनाव को प्रकट करती हैं। हृदय में रिस रहे ज्ञान के तनाव को कागज़ पर उतरने का सामर्थ्य केवल मुक्तिबोध की कलम में था। मुक्तिबोध समाज की विसंगतियों से परेशान थे और समाज की विसंगतिया जहां तहां उनके काव्य में दिखाई देती हैं। उनके काव्य में समकालीन समाज की चिंता का कारण दिखाई देता है और साथ ही उन कारणों से वे स्वयं भी परेशान थे। अपने स्तर पर आत्मसंघर्ष और समाज के स्तर पर पर तनाव ग्रसित काव्य अभिव्यक्ति यह समय और समाज की मांग तो है ही साथ ही साहित्य और साहित्यकार का समाज के प्रति जो दायित्व है वह भी मुक्तिबोध पूरा करने का प्रयास करते दिखाई पड़ते हैं।

"वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पाई गई मेरी अभिव्यक्ति है,
पूर्ण अवस्था वह "[3]

उपरोक्त पंक्तियों में अभिव्यक्ति और उसकी स्वतंत्रता को ढूंढते मुक्तिबोध अपनी कविता में अपने अचेतस अस्तित्व को ढूंढ रहे हैं जो उनकी आत्मा की प्रतिमा है और वह उनकी पूर्णावस्था है। असल में वह मानव मात्र की संवेदना को खोजते और जगाते फिरते हैं। एक सम्पूर्ण और सचेत मानव की तलाश करते फिरते हैं, जिसे उपभोक्तावादी बाजारू संस्कृति ने अचेत कर दिया है और बहुत कमजोर बना दिया है। यह पूर्ण रूप से बाज़ार जीवी हो गया है उसका अपना अस्तित्व या तो खतरे में है या ख़त्म हो गया है। मानव चेतना

के घुटने इतने कमजोर हो गए है की कभी बार बार उन्हें मसलकर खड़े होने का प्रयास कर रहा है।

"कमजोर घुटनों को बार-बार मसल,
लडखडाता हुआ मैं
उठता हूँ दरवाज़ा खोलने,"[4]

उपरोक्त पंक्तियों में मुक्तिबोध ने घुटनों का प्रतीक प्रस्तुत करके मानव के चेतना तंत्र की नीव की कमजोर अवस्था का चित्रण किया है। मुक्तिबोध आत्मसंघर्ष की स्थिति में अपनी चेतना को जागृत करने के प्रयास करते हैं , मसल कर जमे हुए घुटनों में उर्जा के संचालन का प्रयास करते हैं और आत्मचेतना के द्वार को खोने का प्रयास करते हैं लड़खड़ाते हुए। यह आत्मचेतना कोई हवाई और रहस्यवादी चेतना नहीं है। यह मानव मन की न्याय प्रिय और अन्याय विरोधी चेतना है जो कवि जागृत करना और अभिव्यक्त करना चाहता है।
लोकधर्म और लोक मंगल की अवधारणा को लेकर चलने वाला हिंदी साहित्य यहाँ भी मानव संवेदना को चेतना प्रदान कर रहा है। लोक और जनता की आत्म संभव शक्ति को जागृत कर रहा है जिसे उपभोक्तावादी संस्कृति ने विलुप्त कर दिया है। इस मानसिक विलुप्तता में मानस का जीवन लोभ और उपभोग तक सीमित रह गया है। इस सम्बन्ध में स्वयं मुक्तिबोध लिखते हैं –

"जगत और जीवन में अंतर इतना ! मनुष्य की अपनी आतंरिक मौलिक प्यास क्या योहीं अंधेरे में रह जाये सिसकती सी ? क्या यह जगत केवल बाज़ार की सड़कों पर घूमने वाले खरीदने के लिए आतुर जनसमुदाय, या सरकारी दफ्तरों में बैठने वाले कृत्रिम महान मनुष्यों तक ही सीमित है ! इनसे बहार, इनसे परे क्या जगत का फैलाव नहीं है ? फिर क्यों है यह जगत और जीवन का विरोध ?
जब जीवन की वेदना और उसकी शक्तिमान विश्वस्त प्रसन्नता अगाध हो जाती है , तभी वह सम्पूर्णता का क्षण आता है , जिसके सामने जगत एक विरोधी भीत के सामान पड़ा न रहकर धूल के कण के सामान नम्र हो जाता है।"[5]

एकालाप में संलाप के कवि , संलाप में एकालाप के कवि , आत्म अभिव्यक्ति के कवि , साहित्य के शांति दूत , प्रेम के कवि , जमीन के कवि , गूढ़ अनुभूति के कवि , विशाल बिंबों के कवि , अचल संवेदनाओं के कवि , कवियों के कवि , चित्रकार कवि , शमशेर अपने अपनी जीवन अवधि में काव्य का एक ऐसा महल बना गए जिसमें प्रवेश करने करने का साहस या उस महल को समझने का साहस हर कवि में नहीं है। नामवर सिंह यहा तक कह देते हैं कि उनके कविता घर में घुसने का साहस मुक्तिबोध में भी नहीं है –

"शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का जो एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों से तैयार किया है , उसमे जाने से मुक्तिबोध को भी दर लगता था।"[6]

भले ही मुक्तिबोध ने शमशेर संबंधी अपनी समालोचना में इस बात को कहा है कि मुझे शमशेर के बनाए हुये प्रभावशाली भवन में जाने से दर लगता है परंतु उन चंद लोगों में मुक्तिबोध हैं जो उस भजवान में प्रवेश कर पाये ओर साथ ही उस भवन की दीवारों पर बने चित्रों और उन चित्रों के कलाकार को समझ पाये। सम्पूर्ण अभिव्यक्ति की तलाश में मुक्तिबोध को अपनी खोई हुई अभिव्यक्ति मिली हो या नहीं पर एक सम्पूर्ण कवि जरूर मिल गया है। सम्पूर्ण मानवीय चेतना के चित्रकार को 'इंप्रेश्निस्टिक कलाकार' की उपाधि देते हुये स्वयं मुक्तिबोध लिखते हैं-

"शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इंप्रेश्निस्टिक चित्रकार की रही है। इंप्रेश्निस्टिक चित्रकार अपने चित्र में केवल उन अंशों को स्थान देगा जो उसके संवेदना ज्ञान की दृष्टि से, प्रभावपूर्ण संकेत शक्ति रखते हों।"[7]

शमशेर की कविता उनकी एक लंबी कविता है। उनकी इस कविता का कारण तनाव बेचैनी का स्वप्न और कुछ अपूर्ण चेतना नहीं है यहाँ कवि शमशेर एक शाश्वत सत्य की खोज में लगे है। वह सत्य जो आत्मा को सुकून देता है। अमन का राग स्वयं वह शाश्वत सुकून देने वाला सत्य है जो बिना किसी तनाव और चिंता के एक लय में चलता रहता है। विश्व शांति दूत इस प्रकार इस राग को शुरू करता है।

"सच्चाइयाँ
जो गंगा के गौमुख से मोती की तरह बिखरती रहती है
हिमालय की चोटी पर चाँदी के उन्मुक्त नाचते
परों में झिलमिलाती रहती है "[8]

शमशेर अमन के राग को गाते तो हैं ही साथ ही विश्व को शांति ओर सुकून का पैगाम देते हुये नाच भी उठते हैं। वे सब संस्कृतियों भाषाओं विश्व की तमाम विभिन्नताओ के कायल है। वे जग की विभिन्नता को देखकर प्रसन्न है। शमशेर काव्य में तनाव न देकर खुशहली देते है। सकरतमकता की गहरी शांति के राग वे खुद ही हैं।

"बहुत हौले हौले नाच रहा हूँ
सब संस्कृतियाँ मेरे सरगम में विभोर हैं
क्योंकि मैं हृदय की सच्ची सुख-शांति का राग हूँ
बहुत आदिम, बहुत अभिनव "[9]

शमशेर ने जब यह कविता लिखी द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ती का समय था। इस वक्त कोई कवि सकारात्मकता का संगीत लिख रहा है साथ ही उस युद्ध के क्रिया कलापों के विकल्प समाज को सौंप रहा है। कवि इस चिंता में मारा नहीं जा रहा की की विनाश कि विनाश कि हथियारबंदी युद्ध कि लपट संसार को जला रही है बल्कि वह बता रहा है कि संभावनाएं अनंत है। यह भविष्य जो बच्चों के हाथो में है यह

खुशी के खिलौने बन सकता है। यह लोहा जो खतरनाक हथियार बन रहा है यह लोगों को जोड़ने का रास्ता बन सकता है।

"युद्ध के नक्शों को काईची से काटकर कोरियायी बच्चों ने
झिलमिली फूलपत्तों की रोशन फ़ानूसे बना ली है
और हथियारों का स्टील और लोहा हजारों
देशों को एक दूसरे से मिलानेवाली रेलों के जल में बिछ गया है "[10]

तुलनात्मक अध्ययन के संबंध में अक्सर आलोचक की यह अवधारणा होती है कि 'कौन सा कवी श्रेष्ठ है' यह ज्ञात करना ,इसी के साथ तुलनात्मक अध्ययन पद्धति को साहित्य और साहित्यकारों के मूल्याङ्कन की कसौटी मान लिया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन का सही उद्देश्य किसी रचना या कवी की काबिलियत का ग्राफ तैयार करना नहीं बल्कि विभिन्न साहित्यकारों और साहित्य की आधारभूत भिन्नता और एकता का ग्राफ तैयार करना है। इसी से साहित्य वैश्विक स्तर पर अध्ययन क्षेत्र का निर्माण करता है और विश्व साहित्य की अवधारणा जन्म लेती है । यहाँ एक ही दशक में जन्मे हिंदी के दो कवियों द्वारा रचित लंबी कविताओं को तुलनात्मक अध्ययन का आधार बनाया गया है और इन दोनों भिन्न प्रकृति के कवियों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह जानने की कोशिश की है कि ये एक ही समय के दो हस्ताक्षर किस प्रकार समानतए और भिन्नताएँ रखते हैं। मुक्तिबोध एक तरफ भयानक खबर के कवि हैं , कहीं आग लग गई , कहीं गोली चल गई , कारावास दे दिया आदि । दूसरी तरफ शमशेर सुकून और अमन का राग कम शब्दों में प्रेम समुद्र में डुबोकर प्रस्तुत करते हैं। अंधेरे में कहीं कुछ खो गया है तो दूसरी तरफ जगत शांति का राग कोई आलाप रहा है । देश के स्वाधीनता संग्राम को झेलकर कुछ करने की सब कुछ बदलने और सच्चे सुख शांति की स्थापना करने का सपना शमशेर देख रहे हैं और यह सपना कोई दुरूह सपना कतई नहीं है। यहाँ तक की दूसरे विश्व युद्ध के समाप्त होने पर 1945 में शमशेर अपने अमन के राग में तीसरे का निषेध कर देते हैं।

"मैं निराला के राम का एक आँसू
जो तीसरे महायुद्ध के कठिन लोह पर्दों को
एटमी सुई-सा पार कर गया पाताल तक
और वहीं उसको रोक दिया "[11]

चाँद का मुंह टेढ़ा है में संकलित कविता 'अंधेरे में' का संभावित समय 1957 से 1961 है देश के हालत उस वक्त कुछ अच्छे नहीं थे। भारत चीन युद्ध के हालत थे और हथियारों की होड लगी थी। आजादी की एक झूठी थाली मिली थी जिससे मोह भंग ओर तनाव की स्थिति बनी नहीं थी ऐसे में मानव की चेतना और मानवीय चेतना को खतरा था। इसी सामाजिक यथार्थ को मुक्तिबोध की कविता व्यक्त करती है । यथार्थ की दृष्टि से देखा जाए तो मुक्तिबोध उस दुरूह स्वप्न को अभिव्यक्त कर रहें हैं। भविष्य में संभव हो सकने वाला दुरूह स्वप्न।

"टैंक-दल , मोर्टार , आर्टिलरी , सन्नद्ध ,
धीरे धीरे बढ़ रहा जुलूस भयावना ,
सैनिकों के पथराए चहरे
चिढ़े हुये , झुलसे हुये , बिगड़े हुये गहरे !"[12]

शमशेर और मुक्तिबोध एक ही समय के साहित्य के दो हस्ताक्षर हैं। शमशेर और मुक्तिबोध दोनों अलग संवेदना के कवि हैं। दोनों कवियों मे आग पानी का अंतर है। मुक्तिबोध के काव्य की लपट जितनी ऊर्जा है उसके विपरीत शमशेर के पानी की शीतलता उतनी ही गहरी है। एक तरफ शमशेर विश्व युद्ध के पश्चात भी विश्व मे अमन का राग आलाप रहे हैं दूसरी तरफ मुक्तिबोध में युद्ध होने का डर है ओर समाज की विसंगतियाँ।

प्रगाढ़ प्रेम और प्रकृतिक सौन्दर्य की संवेदना को लेकर विश्व शांति का स्वप्न देखने वाले शमशेर कुछ करने की संभावना लेकर जीते हैं। विसंगतियों में भी एक आशा की किरण उनकी कविताओं में दिखाई पड़ती है। जो उनके सच्चे कवि के प्रमाण प्रस्तुत करता है।

"हार-हार समझा मैं
तुमको अपने पार।
हंसी बन खिली सांझ बुझने को ही।
एक हाय-हाय की रात
बीती न थी ,
कि दिन हुआ। "[13]

यदि शमशेर संभावनाओं के कवि हैं तो मुक्तिबोध उन संभावनाओ से पहले कि सूचना प्रदान करने वाले कवि हैं जो समाज का कच्चा चिट्ठा अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं । विसंगतियों और आत्मसंघर्ष की परिपाटी पर यथार्थ का आख्यान समय की आवश्यकता हैं। समाज में सुलभ साहित्य लिखने वाले प्रभुत्व वर्गों ने काफी मलाई लिखी है पर शायद जमीनी हकीकत हमें ऐसे की साहित्यकारों से प्राप्त होगी। बाकी परिपूर्ण संवेदना और शांति की कामना और उपासना किसी न किसी रूप में चलती रही है एक कवि समाज में ऐसा भी जरूरी है। मुक्तिबोध और शमशेर दोनों कवि समय की आवश्यकता हैं। समाज में व्याप्त विसंगतियों के चित्रण और उसका विरोध करने के साथ जनमानस को अभिव्यक्ति के खतरे उठाने की ओर प्रेरित कर मुक्तिबोध एक संघर्ष चेतना जागरण के कवि बनते हैं। दूसरी ओर शमशेर भेदभाव को दूर कर प्रेम का संदेश देकर समाज को एक करके एक नई संभावना के कवि बनकर प्रस्तुत होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मुक्तिबोध, गजानन माधव. (2010). प्रतिनिधि कवितायें. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.129
2. अमरनाथ.(2013). हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली.नई दिल्ली: राजकमल.पृष्ठ.166

3. मुक्तिबोध, गजानन माधव. (2010). प्रतिनिधि कवितायें. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.128
4. मुक्तिबोध, गजानन माधव. (2010). प्रतिनिधि कवितायें. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.132
5. मुक्तिबोध, गजानन माधव. (2007). नई कविता का आत्मसंघर्ष. नई दिल्ली: राजकमल. पृष्ठ. I9
6. सिंह, शमशेर बहादुर. (2011). प्रतिनिधि कवितायें. नई दिल्ली: राजकमल, पृष्ठ. 5
7. देवताले, चंद्रकांत. (2012). डबरे पर सूर्ज का बिम्ब. नई दिल्ली: एन. बी. टी. पृष्ठ. 94
8. सिंह, शमशेर बहादुर. (2011). प्रतिनिधि कवितायें. नई दिल्ली: राजकमल, पृष्ठ. 92
9. सिंह, शमशेर बहादुर. (2011). प्रतिनिधि कवितायें. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.92
10. सिंह, शमशेर बहादुर.(2011).*प्रतिनिधि कवितायें*. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.96
11. सिंह, शमशेर बहादुर.(2011).*प्रतिनिधि कवितायें*. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.95
12. मुक्तिबोध, गजानन माधव.(2010).*प्रतिनिधि कवितायें*. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.137
13. सिंह, शमशेर बहादुर.(2011).*प्रतिनिधि कवितायें*. नई दिल्ली: राजकमल,पृष्ठ.28